B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 3(b)
Topic – आगमन-निगमन विधि
(Inductive-Deductive Method)
Lecture No. - 53

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

आगमन-विधि
(Inductive Method)

आगमन-विधि शिक्षण की उस विधि को कहते हैं जिसमें विशेष तथ्यों तथा घटनाओं के निरीक्षण एवं विश्लेषण द्वारा सामान्य नियमों या सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है। यह शिक्षण-विधि ज्ञात से अज्ञात की ओर, विशिष्ट से सामान्य की ओर तथा मूर्त से अमूर्त की ओर जैसे शिक्षण सूत्रों के प्रयोग पर आधारित है।

इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षक बालकों के समक्ष प्रकरण से संबंधित विभिन्न उदाहरणों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने के लिये कहता है। उसके बाद दिए गए विशिष्ट उदाहरणों से किसी सामान्य नियम या सिद्धांत का अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करता है।

यह विधि गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, हिन्दी या अंग्रेजी व्याकरण आदि विषयों के शिक्षण हेतु प्रमुख विधियों में से एक है।

आगमन -विधि के सोपान
(Steps of Inductive Method)

आगमन-विधि के द्वारा शिक्षण निम्नलिखित सोपानों या चरणों में किया जाता है -

1. **उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण** - इस सोपान में शिक्षार्थियों के सामने अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

2. **विश्लेषण** - शिक्षार्थियों द्वारा उदाहरणों का अवलोकन किया जाता है। तत्पश्चात सभी उदाहरणों में से सामान्य तत्व की खोज करके एक ही परिणाम पर पहुँचने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाता है।

3. **सामान्यीकरण** - छात्र उदाहरणों के निरीक्षण-परीक्षण के पश्चात्त शिक्षक के मार्गदर्शन में सामान्य नियम निकालते हैं।

4. **नियम की सार्थकता का परीक्षण** - इस सोपान में छात्रों द्वारा निकाले गए नियम की विभिन्न उदाहरणों द्वारा जाँच की जाती है।

चूंकि आगमन-विधि एक ऐसी विधि है जिससे सामान्य नियमों या सिद्धातों की खोज की जा सकती है। शिक्षकों को उदाहरण प्रस्तुत करते समय छात्रों के मानसिक स्तर का ध्यान रखना चाहिए।

आगमन-विधि के गुण
(Merits of Inductive Method)

इस विधि के निम्नलिखित गुण हैं -

1. यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है।

2. यह छात्र केन्द्रित विधि है।

3. इस विधि द्वारा शिक्षण से छात्रों में सामान्य तथ्य स्थापित करने , प्रासंगिक प्रश्न का निर्धारण करने, इन प्रश्नों का अनुकरण करने के तरीकों का विकास एवं व्याख्या करने के कौशलों का विकास होता है।

4. विशिष्ट तथ्यों एवं अवलोकन से अनुमान लगाने की प्रवृत्ति का विकास होता है। यह कौशल विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

5. छात्रों को नवीन ज्ञान खोजने का प्रशिक्षण मिलता है।

6. चूंकि सभी छात्रों के अनुमान में भिन्नता होने की संभावना रहती है , समूह में किसी विषय पर आपसी संवाद करने तथा विचारों की साझा करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

7. इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान स्वयं छात्रों द्वारा खोजा गया होता है, इसलिए स्थायी होता है।

8. यह विधि छात्रों में रटने की प्रवृत्ति में कमी लाती है।

Continued to the Next Lecture....